

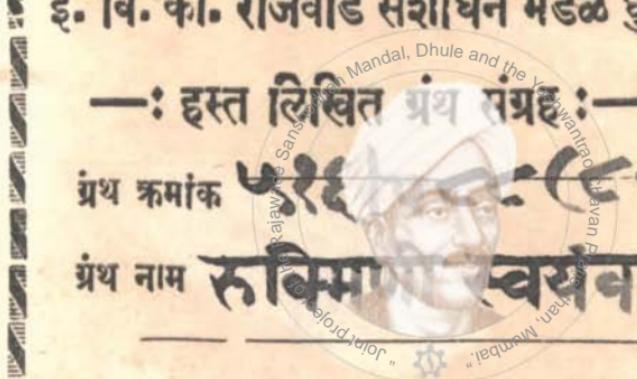
इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुक्कें.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ५२६ :- (८८)

ग्रंथ नाम रुद्रिमा वयनर.

विषय मराठी काव्य.



• श्रीगेहायनमाः ॥ श्रीसरस्वतेनमाः ॥ श्रीगक्षयोनमाः ॥ अं॒
पीव्यभस्त् ॥ पुंनभोऽिश्रीछच्छनाथा ॥ गणेशसरस्वतीन्
जोमेधरिता ॥ लुंचीलुंकडे वला ॥ कवणाभालामीधांथु
॥ ॥ लुंचीआरवीकडाघदे जान ॥ भहजगुरुकुंडानादि ॥
श्रीछच्छंकघेक्षीस्तावीसी ॥ जीजाभगुणगावया ॥ आः
ऐकाश्रीछच्छकथाश्वनण ॥ लेणेचितवृतीचेधत्तीडाण ॥
कर्मीकर्मीआश्वेपण ॥ लाडलेंद्यानभीमकीसी ॥ ३ ॥ शुक
योगीद्वाप्रली ॥ मन्त्रेकलापरिक्षीली ॥ भीमकीठारणश्री

(1)

पती॥ कांयेनीमीयं पैकेलें॥४॥ कांकरी तो सम्भणसी प्रभा
घरी मी स्तोदक जाण ॥ वदने कथां मूल श्रवण ॥ देंडी बनम
जनुझें॥५॥ वीश पहें छां चरीत्र ॥ दुझेनी मुरवेशुद्ध पवीत्रा
श्रवण करीतां माझे श्रोत्र ॥ आधी कांजू केले॥६॥ इ
लरकथान कै पुडी॥ नीयं न ईची गोडी सुंडाणती डोला
वडी॥ ते परा मुरथ डीपावेले॥ दरवोनी भक्त्राचालाद्दस्॥ शु
कक्षेसी डाळा साद्दस्॥ कै सावचन वोलिलां भीरा॥ छपाजा
पारु बायाची॥७॥ औका बापा परीक्षीती॥ घूलवं सुरवाची

(१८)

सुखमीति ॥ भीमकीभाषीयहृष्टीति ॥ येथानीगुलिसोगम
३१ ॥ ४ ॥ अगवसुद्वानीपेतपमापी ॥ कृष्णदेवकीउद्गामेती ॥
कृष्ण-चीजोकृष्णराकी ॥ जाते लक्ष्मीभुमंडवी ॥ ५० ॥ क
नकासवेंडैरसीकांती ॥ कृष्ण सवेडैसीदिप्री ॥ लैरसीआवल
रलीकृष्णराकी ॥ वेदर्भद्रै ॥ ५१ ॥ उैसामुलीमंल
वीवेक ॥ लैसाठाणराजाजीमक ॥ सत्तुथीलजातीसावीका
नीकृकरोभत ॥ ५२ ॥ श्रद्धापनीसुद्धमती ॥ जातीशमार्ते

(२)

धर्ती ॥ तेथें जन्मलिक कृष्ण शत्रुघ्नी ॥ क्षमि हांकी रुक्मी यी ॥ १३ ॥
जवनी धाते वीनव मास ॥ गर्जो भरते पुणे द्विनस ॥ सांगडे
मली सपास ॥ नवनी भाना चीण ॥ १४ ॥ पांचानी षयात्रे
सेवं ठी ॥ सुबुद्धि तुम डेवि ठी ॥ तेसी पांचाठी धाकु घी
जाढ़ी गोरठी रुक्मी यी ॥ १५ ॥ उन जन्मलिक कुसी ॥ दैहु जन्मा
वडे गायासी ॥ अमान्यकर नी पाचासी ॥ तेवी येको पाठये
ली ॥ १६ ॥ त्यरूप सेव लक्ष्मी सुंदर ॥ लवण्य गुणे गुण गंभीर ॥

(२८)

तैसीकबळे ठांचांची ॥ २१ ॥ धवडवडवं कुरुरेवा ॥ लैसींचेर
णींची सामोद्दी केदेवना ॥ नवणीवतीस छस्त्रमुखना ॥ ब्रह्मा द्विका
लकह्य ॥ २२ ॥ पीछोन्हेदि नीक कीकी ॥ दोलतंगीस छलनुसां
वकी ॥ पातुलेंस कुमारके चव्ही ॥ दोणीनीकी होहुंभांजी ॥ २३ ॥
सुनीक जमान्चीया कुकीक ॥ दाखंगे कीकायोदेवा ॥ वरीन
संस्थांचे द्रेरेवा ॥ घनणीपि युध्यालव्यलीया ॥ २४ ॥ सांकुकी
कंठाषवाचेंडीक ॥ सलेचनभगडिस्तंज ॥ लैसे घरणडी

(3A)

The Rose of Sanskrit Mandal, Dhule and the
Society of Sanskrit Recitation
Digitized by srujanika@gmail.com

(3)

दीवरें दीवर सजाली थोर ॥ वरनी चार गंयासी ॥ १७ ॥ लेखें कीती
 नामा ब्राह्मण राधा भासी भाला जाए ॥ लेखे कै छें दहुँ दहुँ कीतिना
 लेखें लग्नु मन वेद्यले ॥ १८ ॥ वैस गीहोली नाधापासी ॥ सादरदेवो
 नी भी मनकीसी ॥ मगबाजी ॥ उमपासी ॥ घीरवर मेसी राकं
 र ॥ १९ ॥ लौनी गुणी विकि ॥ जीकं मनी तेषच्यार ॥ लोधी डा
 लानी साक्षात् ॥ लौलावी ग्रठी श्री दहुँ दहुँ ॥ २० ॥ अली सुंदर
 चंगे ललें ॥ उपमे कठीन गतो प्रक्षेंग ॥ बाल हुर्योनी उडालें ॥

We have made Sanmedhan Monohar, Dhule and the Kisan Chhatra Chhatra Panchayat available online.
 आपको सामेधन मोहर, धुले और किसान छत्रा छत्रा पंचायत का इंटरेक्टिव वेबसाइट मिल रहा है।

स्वयंसे ॥ दृष्टशरिरि शोभती ॥ २५ ॥ दृष्टविंगालक्ष्मेप
वे । वीजुसीपुठलाले योगुणे । वीसवलीहीरतभानाज्ञाणे ।
पीतावरपणकासोसी ॥ २६ ॥ दृष्टचन्द्रान्वेनीजुरोये ॥ वा
कीनेवेदाव्याख्यालेतुणे । लेतवधरनीदेलेमोन्य ॥ २७ ॥
कीरनेकेगडे ॥ २८ ॥ सोहै जान्वेनीगढ़ाइ । चेरणीयांगजी
तीनेपुरो । मुमुक्षान्वेमनवीद्धसुरं ॥ मालेवैरेकवीतसे ॥
२९ ॥ तोरडगडेकवणभानी ॥ उजन्मभृसहरिन्वेचेनी ॥ ना

(1)

५८) नीउपासकांस्तुगुरी॥ संकटमवीकत्यगेहीया॥ ३७॥ अनंतर
पनाकुल्लेवेद्वि॥ तेजाकलीजेत्रेवीसद्गुरी॥ तेजीमेवलभा
जमधी॥ चीक्रेनसंधीज्ञात्तिज्ञासे॥ ३८॥ स्यपदपावलीय
पाष्ठी॥ हेकीवृत्तीहोयेत्॥ तेज्याकिञ्चिजीशुद्धिधंषी॥
अद्योमुखमेवल्ले॥ ३९॥ शयेत्तीभाड्डुसाना॥ हेत्ताजा
सीमानपञ्चानना॥ द्रवोनीद्धर्षमध्येयरचना॥ लाजोजी
गथालोगेढा॥ ४०॥ पाणावयाद्धर्षमध्येयरचना॥ चीक्री

(5A)

चीं लेपें डाली डाया ॥ सौडनी इग्नी व्याज्या मी भाना ॥ मेरवेळे
स्वेवना स्वयें डाईली ॥ ३३ ॥ नाजी सीं नाभी भाभी तांग ॥ दृढ़नवी
रवी टुकु वीध्याला ॥ तेथी चावा राना ठातां, पेवी धताने येदी ॥ ३४
प्रणोनी प्रमना भी नावा ॥ ठडी त्रेलो भसासां ठोवा ॥ तरंगा
पेकेला ॥ बुद्धा सागरी ले गनहुाळी ॥ टोकी उदी त्रीयु
गुण त्रीवळी ॥ कभोक्तमी भी मावळी ॥ बहौप मुखें वाढली या
॥ ३५ ॥ नक्कले हृदृशें महुी मान ॥ उपनी वद्या पडी लेमो

(5)

३५॥ व्य ॥ ते थें ठी संवर के सजन ॥ इहो षष्ठी मान सो दुनी ॥ ३५॥
शुभ सांडोनी नीराव काश ॥ ते ची छछ हृदय सावकाश ॥
सर्वी केला रुठी वास ॥ वृली भुव्य हुनी व्यां ॥ ३६॥ तथे
यं दीजे सद्गीत ॥ तथी जले पदक जाप ॥ मुक्त मोती
लग संपुर्ण ॥ गुण की यत्ते से ॥ ३७॥ ज्ञान वेद राज्य
सुकी संपुर्ण ॥ जी पञ्चली मुक्त मोती ये गोभिं ॥ तथी
ये कावली कंठी ॥ श्री छछान्वे शोभव ॥ १० ॥ इन वीड़ियों

(SA)

(6)

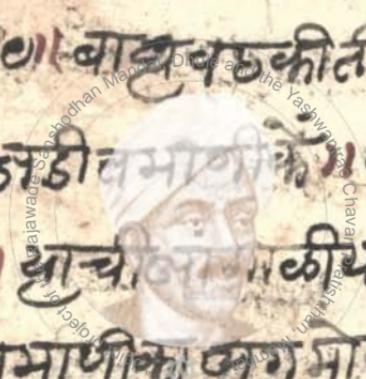
समानकङ्ग ॥ लेदीलधाद्वनभावा ॥ शांतीनीजशांतीनी
मिळ ॥ कुण्डलाकंवेजयंती ॥ ४ ॥ अँकारभात्रुकासगठ ॥
लोचीजाणावाकंबुकंह ॥ घट्टाचेजेथुनीभुवफीठा ॥ लेथ
नप्रगेठत्रीकांडि ॥ ५ ॥ लायोरामुपनीषधाचीवाणी
आर्थकाछिलगशोधुनी ॥ कंछीकोस्तुभमणी ॥ नी
उक्तणीशिक्कत ॥ ६ ॥ गगनगजाचेष्टुंडांड ॥ लेखे
सरङ्गवाहुदृढ ॥ पराक्रमेजतिप्रपंड ॥ अभयेदाग्रुही

(6A)

ल ॥४॥ पंचभुतेभीष्मभीव्वा ॥ तैस्यावगोक्षीयाज्ञान ॥ तर्णहा
 ललोभाधीव्वान ॥ पंचैहीमीक्षीयेकमुष्टि ॥ ५॥ चंद्रुरवा
 णी-वीक्षीयाशक्ति ॥ सांवी-स्याहारुद्गारोज्ञत्वे ॥ बायुष्ट्येवसवा
 लीहातीनां कवणे स्थातीपाहुना ॥ ६॥ असुंतज्जेतेजाकार ॥ द्वे
 लदृक्षणीसलेजाधार ॥ तेसीधु तेत्योक्त ॥ व्यवीमध्येत्तुम्भु
 ॥ ७॥ घायेजाभीमानकरीचेनु ॥ तेदीज्ञकेपैंगद्वा ॥ नीशम्भु
 ठकीशम्भु ॥ वेदानुवादा पंचजन्य ॥ ८॥ अओहुमकमठभे

(7)

छली ॥ लेवूं सुरजे के बीचली ॥ तयां चेपु हो गो छानी ॥ ५
 द्विये कमल वाहन से ॥ ६ ॥ वालु वाल की तीभुरवे ॥ चाली वेहू जा
 ले सुरवे ॥ करीं कं करे उड़ी लभारी ॥ वाली किल वेहू त ॥ ७ ॥
 येव तुम वणी उपासका ॥ खाची जानी ॥ वीथा प्रांतुका ॥ वीको अष
 द्विये कर्ण का ॥ उड़ी लभारी का लग जाक ॥ ८ ॥ पुरुष वरमी
 मासा द्वौ नी ॥ कुंडले डालीं कहूं अवणी ॥ उपनी बद्धार्थी करी ॥
 सङ्कलता ली सबडो ॥ ९ ॥ येक सुणी लिसाकार ॥ येक पूर्ण दी



मकराकारा ॥ परीतोसाकारुनानीर्विकारु ॥ श्रवणेवीकारुभावूल
ती ॥ ५३ ॥ गाव्येनीयामोक्षसुरव ॥ त्रेथीचामुखावेनीहारीव ॥ ले
वीदृष्ट्यान्वेश्वीमुरव ॥ नीष्टुकीर्देश्वीरवत ॥ ४४ ॥ उपमेन्द्रेकु
लीक्षणगहन ॥ लोलवंशदृष्ट्यपक्षीक्षीय ॥ ठृष्ट्येष्ट्यास्तकवीणस्त
पुष्टि ॥ वद्वनेदुद्धर्मच्छन्नाच ॥ ५५ ॥ वशीवयेकाकार ॥ लेसेमी
नलेद्वाळीवधर ॥ माडीहुलपक्षीलेजाकार ॥ चीद्वानंदेश्वर
कली ॥ ५६ ॥ जास्तिकोद्दुनीजास्तिक ॥ उच्चावलेलेनाहीक ॥ पव

(A)

(8)

नठीं इलां पावला कुः रव ॥ दृष्टि स्वासें सुरनी जाता ॥ ८७ ॥ वीराक
 उक्ते चैतन्यपणे ॥ लेथें वीसाबों अलें पाहालें पहाणे ॥ जपवापणी
 यालें देखणे ॥ सबाध्यां लरसम हुयी ॥ ८८ ॥ इननवाइनांची पा
 ली ॥ मीजापणेत्कवल हुती ॥ सोगानी माशुती ॥ सहजास्ती
 ली पाहातेसे ॥ पथाजाधीक्षा नव शाक जागी ॥ तेसीशोभा हुयं
 कपाळी ॥ सहजानंद्येकेमेळी ॥ लेचीत्रीवक्कीलहुती ॥ ८९ ॥
 गाळेनीयां बहुपण ॥ सोहुं काछीले त्रुद्धक्षेदन ॥ तेही केले

(8A)

द्वं छपिण ॥ नीजभाकीं मलीवठ ॥ ८१ ॥ सं पुर्णिं गंगनां कुरसनका
 ले से मरलकी येकें शकुरव ॥ द्वं छमुखे सिंही मुख सबव ॥ जा
 धोगतीधाकीं नले ॥ ८२ ॥ द्वं यो बीजैये याची येमुद्धि ॥ जाणुनी बा
 धटीवीरगुढि ॥ सहजभानवा गढि ॥ मगद्वाठवी सुबड़ ॥ ८३ ॥
 जया मुगुठात० वठि ॥ गुट गोरपत्राची येहि ॥ कै सिरोमम
 ताडेगोमठि ॥ हुख्यड़ि धावनात ॥ ८४ ॥ स लोकता ॥ लेलवं
 कीसे सांडी सवथा ॥ दखये पणे वीण डोकसना ॥ तेवी प्राथाल

(9)

बक ॥४॥ उनां कारा माझी जाव डु ॥ डोरें श्री दृष्ट छं सी आधी
क जो डु ॥ तेवी सांगो वी सरटों कुडु ॥ चुकी गाछि पडल सो ॥
६६॥ सक कभु धणाचे शुषण ॥ ब्रह्मणा चाहू दृष्ट अचे रण ॥ इदृष्ट
वोडु नारायेण ॥ श्री बद्धल ॥ गोवीद ॥४॥ इ छां वीजो श्री
भोती ॥ लाव व्यज्ञ लें श्री डु गाव ॥ वरवावरवा श्री पठी ॥ वाचे
कीती बिनु वांडु ॥४॥ डोडु लय व सुदरं दी सो ॥ लेते हृष्ट
चे नीलें डु ॥ डोळ यावेणे लगवी लें पीसो ॥ डनाले प्रोत्वा सें हा

(9A)

रीझांगी ॥ ७४ ॥ सौदर्यन्वान्वानीमान् ॥ मदनालंगी होलापु
 रंगी लेणे ही दिरवो नीयां श्री दृष्टि ॥ रवदेहासीसी वी छला ॥ ७५
 मदने दृष्टि दे रवीला सांग ॥ जंगजाकेनी डाला अबंगा पैया
 येतु नीयां चाग ॥ तुलभांग पावता ॥ ७६ ॥ बरवे पुणे मी भोडी ॥
 होले लक्षी मी चै पोछी ॥ दृष्टि वो नीयां डागडाधी ॥ लेही तुफ
 राधी लडली ॥ ७७ ॥ रपा भावनीया कै सी ॥ रमाडजाली परभ
 वी सी ॥ ठहर्मी नाव उदृष्टि सी ॥ डाली द्वासी पायासी ॥ ७८ ॥



(१०)

छङ्कं देरवीलाड्या हुई ॥ लेपरखोनीमागोतीकुषि ॥ जाधीक
 जाधीकधाली प्राठि ॥ होयेस किनठारीरपी ॥ ७५ ॥ छङ्कं पा
 हावथान्माटगेज ॥ नवनानपीनीयतीडीभा ॥ श्रवणस्त्रव
 गेसीबद्धभा ॥ अभीभाव छङ्कं च ॥ ७६ ॥ छङ्कं रत
 उसेवीत ॥ युसीफीके ठोयनमृता ॥ जमरलंभुलाले सेवि
 ल ॥ लहीचरफडीतहारीरग ॥ ७७ ॥ श्रीभावादारवाणनेल
 मरेंद्रा छङ्कं इन्द्राहीहुइ ॥ क्षयोपावलीईद्रन्येम ॥



Prof. Dr. Bishodhar Mandar, Bhule and the Yashoda
 Project of the Odisha Sahitya Akademi
 Odisha Sahitya Akademi
 Odisha Sahitya Akademi



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com